जान बूझ के जो भूले, चले न फुरमाए पर।
सो लटके सूली आग की, हाए हाए जो हुए बेडर।। ३१ ।।

जो जान बूझकर भूल करते हैं और धनी के वचनों पर नहीं चलते, उनको आग के ऊपर सूली पर उल्टा चढ़ाया जाएगा। तब हाय-हाय करके रोएंगे कि हम धनी से क्यों नहीं डरे?

दुस्मन बैठा दिल पर, सो तो जलाया चाहे।
सो जाहेर फरेब देत है, हाए हाए कोई न चीन्हे ताए।। ३२ ।।

सबके दिल पर बैठा शैतान (अबलीस, नारद) तो सबको जलाना ही चाहता है। वह जाहिरी रूप से फरेब (छल) करके धोखा देता है। पर हाय, उसे कोई पहचानता नहीं।

पीछे पछतावा क्या करे, जब लगी दोजख आए।
इसी वास्ते पुकारे रसूल, मेहेर दिल में ल्याए।। ३३ ।।

जब दोजख की आग लग जाएगी तब पीछे पछताने से क्या होगा? इस वास्ते श्री प्राणनाथजी कृपा करके पहले से ही सावचेत (सावधान) कर रहे हैं।

यों आखिर आए सबन को, प्रगट भई पेहेचान।
तब कहें ए सुध सुनी हती, पर आया नहीं ईमान।। ३४ ।।

इस तरह आखिरत के समय में श्री प्राणनाथजी की पहचान हो जाएगी और तब सब कहेंगे कि हमने वाणी सुनी तो थी, परन्तु हमको ईमान नहीं आया।

सत असत इन खेल में, रहे थे दोऊ मिल।
सो दोऊ जाहेर किए, सांचा दीन झूठा छल।। ३५ ।।

इस संसार में सच्चे (ब्रह्मसृष्टि) और झूठे (माया के जीव) दोनों मिल गए थे। अब दोनों को जाहिर कर दिया कि सच्चा (सुन्दरसाथ) और झूठा छल (माया का जीव) क्या हैं।

।। प्रकरण ।। २६ ।। चौपाई ।। ९०५ ।।

सनन्ध–अगुओं ग्यानी की

अब नींद उड़ी सबन की, आई जो हिरदे बुध।
समझे सब कुरान को, भई रसूल की सुध।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि अब संसार के सब ज्ञानी और अगुओं को ज्ञान मिल गया है। उनकी अज्ञान की नींद उड़ गई है। अब सभी कुरान को समझेंगे, क्योंकि श्री प्राणनाथजी की पहचान हो गई है।

अब नबी प्यारा लग्या, लगे प्यारे सब्द रसूल।
इमाम हुए जाहेर, कदमों सब सनकूल।। २ ।।

अब नबी (रसूल) और कुरान के शब्द सबको प्यारे लगने लगे हैं, क्योंकि अब इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) जाहिर हो गए हैं। सब आकर उनके चरणों में सिजदा करो।

अब रसूल की सुध परी, और सुध परी फुरमान।
ए सबे सुध तब परी, जब आए बैठे सुलतान।। ३ ।।

जब पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी स्वयं आकर बैठ गए तो रसूल साहब की और कुरान की सब हकीकत का ज्ञान मिल गया।

Nijanand App

बलिहारी महंमद की, बलिहारी मुसाफ।
बलि बलि जाऊं काजी की, जिन आए किया इंसाफ।। ४ ।।

मुहम्मद (रसूल) पर तथा कुरान पर और काजी (श्री प्राणनाथजी) पर वारी-वारी (बलिहारी) जाऊं जिसने आकर यह फैसला कर दिया।

ताथें इन बीच अगुओं, जिन करी बड़ी हरकत।
ए जुलम किन विध कहूं, जिन या विध फेरी मत।। ५ ।।

रसूल मुहम्मद से श्री प्राणनाथजी के बीच एक हजार नब्बे वर्ष के बीच में जो ज्ञानी और अगुए हुए, उन्होंने अपनी हरकतों से जो जुल्म किया और लोगों की बुद्धि को उलटा किया, उसका कैसे वर्णन किया जाए?

पढ़ों पढ़ाई दुनियां, अगुओं उलटी गत।
ए होसी सब जरदरूं, अबहीं इन आखिरत।। ६ ।।

ज्ञानियों (आलिम फाजिलों) ने दुनियां को उलटा पढ़ाया और अगुओं ने उलटा रास्ता दिखाया। अब इस आखिरत के समय से सभी शर्मसार (लज्जित) होंगे।

जब काफर देखे अगुओं, तब जाने काले नाग।
करी दुनी को जरदरू, इनहूं लगाई आग।। ७ ।।

आखिरत के समय में जब काफिर लोग इन अगुओं को देखेंगे तो इनको काले नागों की तरह समझेंगे, क्योंकि इन अगुओं ने ही आग लगाई, जिसके कारण दुनियां को लज्जित होना पड़ रहा है।

दुनियां अगुओं देखहीं, तब जाने जैसे जेहेर।
यों दुनियां बीच अगुओं, बड़ा जो पड़सी वैर।। ८ ।।

दुनियां वाले अगुओं को जहर के समान देखेंगे और इस तरह से दुनियां और अगुओं में दुश्मनी बढ़ जाएगी।

ज्यों घायल सांप को चींटियां, लगियां बिना हिसाब।
त्यों अगुओं को दुनियां, मिल कर देसी ताब।। ९ ।।

जैसे घायल सांप को चींटियां चिपटकर काटती हैं, वैसे ही यह सब दुनियां मिलकर अगुओं को काटेगी।

आग दुनी को एक है, अगुओं को आग दोए।
एक आग दुनी की, दूजे अपने दुख को रोए।। १० ।।

दुनियां वालों को तो अपनी ही भूल के कारण पश्चाताप करना है, परन्तु अगुओं को दो तरह की आग में जलना है। एक उनकी खुद के भूलने और दूसरी दुनियां को भुलाने के कारण यह रोएंगे।

और आग सब सोहेली, पर ए आग सही न जाए।
अब देखोगे आपहीं, रेहेसी सब तलफाए।। ११ ।।

और सब आग आसान हैं, पर यह पश्चाताप की अग्नि सहन नहीं होगी। अब तुम खुद इन अगुओं को तड़पता देखोगे।

आग सबों को विरह की, देकर करसी साफ।
जिन जैसी तैसी तिनों, आखिर ए इंसाफ।। १२ ।।

इन सबको विरह की अग्नि से निर्मल करके जिसने जैसी करनी की है उसको वैसा ही फल देकर सबका फैसला होगा।

Nijanand App

विकार सारे अंग के, काम क्रोध दिमाक।
सो बिना विरहा ना जलें, होए नहीं दिल पाक।। १३ ।।

काम, क्रोध और अहंकार शरीर के विकार हैं जो विरह की अग्नि के बिना जलते नहीं और तब तक उनके दिल पाक नहीं होते।

आखिर भी इस्क बिना, हुआ न काहूं सुख।
सो इस्क क्यों छोड़िए, जो रसूलें कह्या आप मुख।। १४ ।।

अन्त समय में भी बिना इश्क के सुख मिलने वाला नहीं है। श्री प्राणनाथजी ने अब अपने मुख से इश्क का रास्ता बताया है, उसको अब क्यों छोड़ें?

अव्वल जो रसूलें कह्या, आखिर सोई प्रवान।
इस्क सांचा हक का, और आग सब जान।। १५ ।।

शुरू से जो रसूल साहब ने कहा था वही आखिर में श्री प्राणनाथजी ने कहा कि हक के इश्क का मार्ग ही सच्चा है और बाकी सब आग के समान है।

जब खसम काजी हुआ, तब नाहीं दुखिया कोए।
महंमद मेहेर करावहीं, सब पाक हुए दिल धोए।। १६ ।।

जब मेरे खसम (श्री प्राणनाथजी) काजी बने, तब कोई दुःखी नहीं रहा, उन्हीं की मेहर (कृपा) से सबके दिल निर्मल हो गए।

रसूल बड़ा सबन में, जिन हक की दई खबर।
कह्या मासूक का सब हुआ, आई कजा आखिर।। १७ ।।

रसूल साहब सब पैगम्बरों में बड़े हैं। इन्होंने खुदा की खबर दी है। हमारे माशूक (श्री राजजी महाराज) ने कहा था उनके कहने के अनुसार अब आखिरत का (न्याय का) दिन आ गया।

तारीफ रसूल की तो करूं, जो इन जिमी का होए।
या ठौर बात जो नूर पार की, कबहूं न बोल्या कोए।। १८ ।।

रसूल साहब इस जमीन के हों, तो उनकी प्रशंसा की जाए। इस संसार में उनके सिवाय अक्षर के पार अक्षरातीत की खबर कोई नहीं बोला।

या सुध पार के पार की, किन मुख न निकसे दम।
बुजरकी महंमद की, करत जाहेर खसम।। १९ ।।

यह खबर जो बेहद के पार के भी पार की है इसके बारे में रसूल साहब के बिना किसी ने भी एक शब्द कभी नहीं कहा। इसलिए श्री प्राणनाथजी रसूल साहब की प्रशंसा करते हैं।

महंमद दीन की पेहेचान, काहूं हुती न एते दिन।
न पेहेचान कुरान की, नातो देख थके कई जन।। २० ।।

इतने दिन तक किसी ने मुसलमान धर्म की पहचान नहीं की और न ही कुरान की पहचान की। लोग कुरान पढ़-पढ़कर थक गए।

पेहेले ए सस्ती हती, मुस्लिम दीन कुरान।
पीछे अति पछताएसी, पर क्या जाने कुफरान।। २१ ।।

पहले कुरान और मुस्लिम धर्म को लोग हलका समझते थे। पीछे सब काफिर लोग इसकी हकीकत को जानकर पछताएंगे।

Nijanand App

सो पेहेचान अब होएसी, करसी साफ दुनी दिल।
किताब याही रसूल की, सुख लेसी सब मिल।। २२ ।।

अब इमाम मेंहदी की सनन्ध किताब से कुरान के सारे रहस्य खुल जाएंगे और दुनियां के दिलों के सारे संशय मिट जाएंगे। तब सब दुनियां मिलकर इस वाणी का सुख लेगी।

सब्द रसूल के पसरसी, तिन फिरसी वैराट।
अकस सबों का भान के, सब चलसी एक बाट।। २३ ।।

श्री प्राणनाथजी की वाणी सारे ब्रह्माण्ड में फैलेगी। यह सबके धार्मिक झगड़ों को मिटाकर एक पारब्रह्म के पूजक बनाएगी।

छोड़ गुमान सब मिलसी, ए जो देखत हो जहान।
जात पांत न भांत कोई, एक खान पान एक गान।। २४ ।।

तब सब दुनियां के लोग अपने अहंकार को छोड़कर अपनी जाति-पाति और खान-पान के भेद भूलकर एक रास्ते पर आ जाएंगे।

एही सब्द सुन जागसी, बड़ी बुध होसी विचार।
याही सदी आखिर की, हक सुख देसी पार।। २५ ।।

इस वाणी को सुन करके सब जागृत बुद्धि (असराफील) के बारे में सोचेंगे। यही सदी (शताब्दी) आखिरी होगी जिसमें श्री राजजी महाराज सबको बेहद का सुख देंगे।

नूर सबों में पसरया, सो कहूं सब सनंध।
याही सब्दों बीच का, उड़ जासी बंध फंद।। २६ ।।

सारे संसार में इस वाणी का प्रकाश फैल जाएगा और इसी सनन्ध की वाणी से सब धर्मों के बन्धन उड़ जाएंगे।

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। ९३१ ।।

सनन्ध–बिना एक महंमद की

इत आए करी जो रसूलें, सो नेक कहूं प्रकास।
तबक चौदे उजाला, किया तिमर सब नास।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि श्री प्राणनाथजी (नूरी रसूल) ने यहां आकर चौदह लोकों (ब्रह्माण्ड) का अन्धकार मिटाकर वाणी का प्रकाश किया। उसका थोड़ा-सा वर्णन करती हूं।

प्रताप बड़ा महंमद का, जिन दिया सबों को सुख।
चौदे तबक की दुनी के, दूर किए सब दुख।। २ ।।

श्री प्राणनाथजी के प्रताप की महिमा भारी है। इन्होंने सारे संसार के चौदह लोकों के दुःख को दूर करके सबको सुख दिया।

इमाम मोमिन इस्क, सब मुख एही सब्द।
सब्द ना कोई दूसरा, बिना एक महंमद।। ३ ।।

संसार के ग्रन्थों में इमाम साहब, मोमिन और इश्क की ही बातें हैं। संसार की जबान बिना एक श्री प्राणनाथजी (महंमद) के और कोई शब्द ही नहीं है।

Nijanand App